संस्कार

संस्कार शब्द का अर्थ है- शुद्धता अथवा पवित्रता। संस्कार शब्द 'कृअ' धातु में 'ध' प्रत्यय के योग से युत्पन्न हुआ है। मुख्यतः संस्कार का अभिप्राय उन धार्मिक कृत्यों से था जो किसी व्यक्ति को अपने समुदाय (समाज) का पूर्ण रुप से योग्य सदस्य बनाने के उद्देश्य से उसके मन, मस्तिष्क और शरीर को पवित्र करने के लिए किए जाते थे, किन्तु हिंदू संस्कारों का उद्देश्य व्यक्ति में अभीष्ट गुणों को जन्म देना भी था।

शबर का मत है कि संस्कार वह है जिसके होने से कोई पदार्थ या व्यक्ति किसी कार्य के योग्य हो जाता है।

- **तन्त्रवार्तिक** के अनुसार संस्कार वे क्रियाएँ तथा रीतियां हैं जो योग्यता प्रदान करती है।

- **वीरमित्रोदय** के अनुसार संस्कार एक विलक्षण योग्यता है जो शास्त्र विहित क्रियाओं के करने से होती है।

- **कुमारिल** के अनुसार व्यक्ति 2 प्रकार से योग्य बनता है। प्रथम- पूर्व कर्मों के दोषों को दूर करने से तथा द्वितीय- नए गुणों के उत्पादन से।

संस्कार शब्द अंग्रेजी शब्द **सैक्रामेंट** का पर्याय है जिसका अर्थ है धार्मिक कानून या कार्य, संस्कार का नमूना अर्थ शुद्धिकरण स्वच्छता और परिष्कार से लिया जाता है, इस प्रकार संस्कार शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक शोधन के लिए किए जाने वाले शुद्धिकरण और अनुष्ठान की धार्मिक गतिविधियों को संदर्भित करता है। व्यक्ति का, जिसके द्वारा वह समाज का एक विकसित सदस्य बन जाता है। जीवन की पूर्णता की प्राप्ति के क्षेत्र में धीरे-धीरे स्वयं को शुद्ध करने की प्रक्रिया को संस्कार कहा जाता है

संस्कारों की संख्या के विषय में विद्वानों में मतभेद बना हुआ है। अलग अलग विद्वानों द्वारा लिखे गए गृह्य सूत्रों में इनकी संख्या भिन्न भिन्न मिलती है।

गौतम ने संस्कारों की संख्या 40 बताई है। मनु ने 13 संस्कारों का उल्लेख किया है। याज्ञवल्क्य ने 10 संस्कारों का उल्लेख किया है।

इसके अलावा पारस्पर गृह्यसूत्र के अनुसार संस्कारों की संख्या 13 , आश्वलायन गृह्यसूत्र में 11 , बौधायन गृह्यसूत्र में 13 संस्कार बताए गए हैं। अंगिरा ने 25 संस्कार, व्यास ने व्यासस्मृति में 16 संस्कार एवं स्मृतिचन्द्रिका में भी 16 संस्कार गिनाये गये है , तथा परवर्ती अन्य स्मृतियों में भी 16 संस्कार ही देखने को मिलते हैं।

गर्भाधानं पुंसवनं सीमंतो जातकर्म च। नामक्रियानिष्क्रमणेअन्नाशनं वपनक्रिया:।। कर्णवेधो व्रतादेशो वेदारंभक्रियाविधि:। केशांत स्नानमुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रह:।। त्रेताग्निसंग्रहश्चेति संस्कारा: षोडश स्मृता:। (व्यासस्मृति 1/13-15)

गर्भाधान संस्कार :

गृहस्थ जीवन में प्रवेश के बाद इसे व्यक्ति का सर्वप्रमुख कर्तव्य माना गया है। यह सभी संस्कारों में प्रथम (व्यक्ति के जन्म से पूर्व) संस्कार है जिसे व्यक्ति के माता-पिता द्वारा किया जाता है। इसे ऋतुकाल की चौथी से 16वीं रात तक करना चाहिए

इस संस्कार का प्रचलन वैदिक काल से हुआ। गर्भधान संस्कार सांस्कृतिक रूप से एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्कार है।

स्त्री और पुरुष के शारीरिक मिलन को गर्भाधान-संस्कार कहा जाता है। इस गर्भाधान संस्कार के अंतर्गत पुरुष द्वारा स्त्री के साथ सं*भोग करके स्त्री में शुक्राणु का निक्षेप किया जाता है। स्त्री का गर्भवती होना ही गर्भाधान कहलाता है। गर्भाधान संस्कार का मुख्य उद्देश्य स्वस्थ, सुंदर, सुशील , गुणवान (गुणवती) , सदाचारी , मानवीय संतान का जन्म होना। गर्भधान संस्कार के माध्यम से शास्त्र (सूत्र साहित्य) हमें यह बताता है कि मनुष्य का जन्म पशुवत न होकर वंशवृद्धि हेतु भी होना चाहिए। साथ ही यह भी बताता है कि मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ होने और मन प्रसन्न होने पर गर्भधारण करने से संतति स्वस्थ और बुद्धिमान होती है।

पुंसवन संस्कार: अर्थात पून- पुमान (पुरुष) का सावन (जन्म) होता है

यह संस्कार स्त्री के गर्भ के तीसरे महीने में किया जाता है। ऐसा करने से गर्भ में पल रहे शिशु के समुचित विकास की कामना की जाती है। पुराणों के अनुसार इसका मुख्य उद्देश्य पुत्र (तेजस्वी पुत्र) की प्राप्ति थी। क्योंकि प्राचीन भारतीय इतिहास के कुछ कालखंडों में समाज में पुत्रों की स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण थी, यह अनेक स्रोतों से ज्ञात होता है। इस संस्कार का उद्देश्य सुंदर और उत्तम संतान को जन्म देना है। इसमें महिलाएं व्रत रखती हैं और नए कपड़े पहनती हैं। रात के समय बरगद की छाल का रस स्त्री के दाहिने नथुने में डाला जाता है ताकि गर्भपात न हो। इस संस्कार में पति जल-गरीब जल को पत्नी के गोत्र में रखकर गर्भ को छूकर वीर पुत्र और संतान की कामना करता है।

तीसरे महीने (तीन महीने के बाद) में इस संस्कार को करने का मुख्य कारण यह है कि गर्भधारण के तीन महीने के दौरान बच्चे का भौतिक शरीर बनना शुरू हो जाता है और मस्तिष्क का विकास शुरू हो जाता है। इस समय गर्भ में पल रहे शिशु में संस्कारों की नींव पड़ जाती है।

हिंदू मान्यता और वैज्ञानिक शोधों के अनुसार ऐसा माना जाता है कि इंसान गर्भ से ही सीखना शुरू कर देता है। उदाहरण के तौर पर हम अभिमन्यु को ले सकते हैं, जिसने माता द्रौपदी के गर्भ में रहकर चक्रव्यूह भेदना सीखा था।

<u>सीमन्तोन्नयन संस्कार :</u>

यह पवित्र संस्कार लाघ्वाश्वालायन स्मृति के अनुसार चौथे माह में , वेद व्यास स्मृति के अनुसार आठवें महीने में , शंख स्मृति के अनुसार छठवें या आठवें माह में होने की जानकारी मिलती है। क्योंकि इस मास में गर्भपात होने की संभावनाएं सबसे अधिक होती हैं।

सीमन्तोन्नयन शब्द का शाब्दिक अर्थ है- “सीमन्त” अर्थात 'केश और 'उन्नयन' का अर्थ है 'ऊपर उठाना'। इसके अंतर्गत पति अपनी गर्भिणी पत्नी के केशों को संवारते हुए ऊपर की ओर उठाता था, इसलिए इस संस्कार का नाम 'सीमंतोन्नयन संस्कार' पड़ गया। अधिकतर सीमन्तोन्नयन संस्कार का सम्पादन गर्भ के चौथे माह में किया जाता था जब तक शिशु का शारीरिक और मानसिक विकास प्रारम्भ हो चुका रहता है। यह एक प्रकार से गर्भ की शुद्धि प्रक्रिया है।

इस समय तक गर्भ में पल रहा भ्रूण सीखना प्रारम्भ कर देता है। इस समय जैसे मां आचरण करेगी वैसे ही संस्कार शिशु को प्राप्त होंगे। उसमें अच्छे गुण , स्वभाव , आचार-विचार , अच्छे कर्म आदि पुष्पित/पल्लवित हों इस लिए मां को उसी प्रकार आचार-विचार , रहन सहन और व्यवहार करना चाहिए। यदि मां ऐसे वातावरण में रहती है जहां अच्छे गुण, स्वभाव और कर्म किए जाते हैं, तो निश्चित ही शिशु के मतिष्क और रूप पर उसका सकारात्मक असर होता है।

जात कर्म संस्कार - पुत्र के जन्म के समय यह संस्कार किया जाता है। संस्कार तत्व में उल्लेख है कि पुत्र प्रसव होने पर पिता वस्त्र सहित स्नान, दानादि की क्रिया करता था। मनुस्मृति में कहा गया है कि- नाभिच्छेदन के पहले जातकर्म संस्कार किया जाता है और सोना से घी तथा मधु का मंत्रों से प्राशन कराया जाता है। इसके बाद से माता बालक को बालक को स्तनपान कराना शुरू करती है।

याज्ञवल्क्य ने भी इस संस्कार का उल्लेख किया है। विष्णुपुराण में कहा गया है कि जातकर्म संस्कार करने के पश्चात पिता विधिपूर्वक स्नान करके नान्दीमुख श्राद्ध और पूजन करता है। आश्वलायन और मित्रमिश्र का विचार है कि जब पुत्र जन्म लेता है तब उसे स्वर्ण की शलाका से पिता शहद और घी चटाता है।

अलबीरूनी लिखता है जब पत्नी बच्चा पैदा कर देती है तो तीसरा यज्ञ किया जाता है जो बच्चे के जन्म और बच्चे के पालन पोषण क्रिया के बीच में किया जाता है। यह 'जातकर्म' कहलाता है। अनिष्टकारी कुप्रभाव बच्चे पर न पड़े इस उद्देश्य से यह संस्कार कराया जाता है इस संस्कार का एक अन्य उद्देश्य संतान को स्वास्थ्य, बुद्धि और दीर्घायु प्रदान करना तथा प्रेत-बाधाओं से बचना भी था।

<u>नामकरण संस्कार :</u>

यह शिशु के जन्म के बाद दूसरा संस्कार होता था। सन्तान को नाम प्रदान करना ही नामकरण संस्कार है। नाम का प्रभाव व्यक्ति के चरित्र पर झलकता है।

ब्राह्मण ग्रन्थों, गृहसूत्रों आदि में नामकरण संस्कार पर विस्तार से व्याख्या की गयी है।

बौधायन गृहसूत्र में यह संस्कार बालक के जन्म के दसवें या बारहवें दिन किया जाता है।

मनु स्मृति के अनुसार जन्म से दसवें या बारहवें दिन ज्योतिष शास्त्रों में कहे गये शुभ तिथि, मुहुर्त और गुणयुक्त नक्षत्र में बालक का नामकरण संस्कार किया जाता है।

निष्क्रमण

निष्क्रमण का शाब्दिक अर्थ है "बाहर जाना, बाहर आना।" बच्चे के जन्म के चौथे महीने में, माता-पिता बच्चे को घर से बाहर ले जाते हैं, आमतौर पर पास के मंदिर में। इस संस्कार की मुख्य प्रक्रिया सूर्य और चंद्रमा आदि देवताओं की पूजा करना और बच्चे को उनका दर्शन कराना है। हमारा शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से बना है, जिन्हें पंचभूत कहा जाता है। इसलिए पिता इस अनुष्ठान में बच्चे के कल्याण के लिए इन देवताओं से प्रार्थना करता है। बच्चा औपचारिक रूप से पहली बार दुनिया से मिलता है। इस दुनिया में जो कुछ भी देखता और सुनता है, उसके आधार पर बच्चे के दिमाग में छाप बनती है। इस संस्कार से बच्चे के मानसिक विकास की शुरुआत होती है।

अन्नप्राशन

अन्नप्राशन संस्कार छठे महीने में किया जाता है या जब पहले दांत दिखाई देने लगते हैं। यह पहली बार होता है जब कोई बच्चा ठोस भोजन खाता है, जिसमें आमतौर पर पके हुए चावल होते हैं। अभी तक बच्चे का पोषण सिर्फ मां के दूध से होता था। यह संस्कार बच्चे के अच्छे स्वास्थ्य, तेज और शारीरिक शक्ति लाने के लिए किया जाता है। माता-पिता शुभ मुहूर्त में देवी-देवताओं की पूजा करने के बाद सोने या चांदी के चम्मच से निम्न मंत्र पढ़ते हुए शिशु को खीर खिलाएं- - शिवौ ते स्तां व्रीहियवावबलासावदोमधौ। एतौ यक्ष्मं वि बाधेते एतौ मुंचतो अंहस:।। (अथर्ववेद 8/2/18)

चूड़ाकर्ण संस्कार

शिशु की उम्र के पहले वर्ष के अंत में या तीसरे, पांचवें या सातवें वर्ष के पूर्ण होने पर बच्चे के बाल उतारे जाते हैं, जिसे वपन क्रिया संस्कार, मुंडन संस्कार या चूड़ाकर्म संस्कार कहा जाता है। यह संस्कार जीवन के एक नए चरण का प्रतिनिधित्व करता है जहां बच्चे के बाल काटे जाते हैं, और नाखून छंटे जाते हैं, जो सफाई, नवीकरण और नए विकास का प्रतीक है।इसके बाद शिशु के सिर पर दही-मक्खन लगाकर स्नान करवाया जाता है व अन्य मांगलिक क्रियाएं की जाती हैं। इसका संस्कार का उद्देश्य शिशु का बल, आयु व तेज की वृद्धि करना है।

वैज्ञानिक रूप से, सिर पर बाल हमारे रूप-रंग को बढ़ाने के अलावा पर्यावरण में विभिन्न हानिकारक तत्वों से सुरक्षा प्रदान करते हैं। नए बाल जो उगते हैं वे मजबूत और साफ होते हैं, जो इस संस्कार का उद्देश्य बताते हैं।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

कर्णवेधन संस्कार

इस परंपरा के अंतर्गत शिशु के कान छेदें जाते हैं। इसलिए इसे कर्णवेधन संस्कार कहा जाता है। यह संस्कार यह संस्कार जन्म के छह माह बाद से लेकर पांच वर्ष की आयु के बीच किया जाता था। मान्यता के अनुसार सूर्य की किरणें कानों के छेदों से होकर बालक-बालिका को पवित्र करती हैं और तेज संपन्न बनाती हैं। इस संस्कार की वैज्ञानिक व्याख्या भी है। कान के लोब में एक महत्वपूर्ण एक्यूप्रेशर बिंदु होता है। गहन शोध के माध्यम से, कई न्यूरोलॉजिस्टों ने कान की लोब और मस्तिष्क के गोलार्द्धों के बीच की कड़ी को दिखाया है।

इसलिए, कान छिदवाने से बुद्धि विकसित करने और श्वसन संक्रमण के खिलाफ और हाइड्रोसील और हर्निया जैसी बीमारियों से प्रतिरक्षा बढ़ाने में मदद मिलती है।

विद्यारंभ संस्कार

बालक को सर्वप्रथम अक्षर ज्ञान करवाना ही विद्यारंभ संस्कार कहलाता है। इस संस्कार को अक्षरारम्भ संस्कार के नाम से भी पुकारा जाता है। गुरु आश्रम में जाने से पहले बालक को भाषा एवं गणित का सामान्य ज्ञान प्रदान करने के लिए यह संस्कार संपन्न करवाया जाता है। यह संस्कार प्रायः घर में ही माता के द्वारा शुरू किया जाता है जिसके आधार पर माता को बालक का सर्वप्रथम गुरु एवं परिवार को बालक की सर्वप्रथम पाठशाला के रूप में माना जाता है। यह संस्कार पर 8 वें वर्ष तक संपन्न करवा दिया जाता है।

यह समारोह उपनयन समारोह से पहले किया जाता है, स्नान के बाद बच्चा पश्चिम की ओर मुंह करके बैठता है और शिक्षक पूर्व की ओर मुंह करके बैठता है।

सरस्वती विद्या और ज्ञान की देवी हैं। विद्यारंभ समारोह में, उन्हें बच्चे के लिए आशीर्वाद लेने के लिए पूजा जाता है। गुरु शिष्य परम्परा के अनुसार, छात्र अपने परिवार के हिस्से के रूप में गुरु के साथ रहकर वेदों को सीखेगा, ज्ञान प्राप्त करने और ज्ञान प्राप्त करने पर दृढ़ ध्यान के साथ एक अनुशासित जीवन जीएगा।

उपनयन संस्कार

बालक के बाल्यकाल के संस्कारों में यह सबसे प्रमुख संस्कार माना जाता है।

बालक को वेद शास्त्रों का अध्ययन करने के लिए गुरु के समीप ले जाना ही उपनयन संस्कार कहलाता है। इस संस्कार को यज्ञोपवीत संस्कार एवं जनेऊ संस्कार के नाम से भी पुकारा जाता है। उपनयन संस्कार केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य का ही किया जाता है। ब्राह्मण बालक का गर्भधारण से 8 वर्ष में, क्षत्रिय बालक का गर्भधारण से 11 वें वर्ष में एवं वैश्य बालक का गर्भधारण से 12 वें वर्ष में उपनयन संस्कार होना चाहिए। यदि इस वर्ष में उपनयन संस्कार नहीं हो पाता है तो अधिकतम ब्राह्मण का 16 वें वर्ष तक, क्षत्रिय का 22 वें वर्ष तक तथा वैश्य का 24 वें वर्ष तक उपनयन संस्कार हो जाना चाहिए। यह संस्कार गुरु के द्वारा संपन्न करवाया जाता है। इस संस्कार के समय गुरु बालक को गायत्री मंत्र का उपदेश भी देता है। इस संस्कार के बाद बालक एक जनेऊ (यज्ञोपवीत) धारण करता है जिसमें प्रायर 3 सूत्र (धागे) होते हैं। प्रत्येक सूत्र में 9 तंतु होते हैं तथा प्रत्येक सूत्र 96 अंगूल लंबा होता है।

इस संस्कार के समय बालक भिक्षाटन भी करता है सर्वप्रथम माता / मौसी / बहिन से भिक्षा स्वीकार की जाती है। जनेऊ में धारण किए जाने वाले तीनों सूत्र तीनों देवताओं के प्रतीक माने जाते हैं – ब्रह्मा, विष्णु, महेश

वेदारंभ संस्कार

वेदारंभ का अर्थ है 'वेदों को सीखने की शुरुआत'। जबकि उपनयन ने शिक्षा की शुरुआत को चिह्नित किया, वेदारंभ वैदिक अध्ययन की शुरुआत को संदर्भित करता है। इस संस्कार में प्रत्येक विद्यार्थी अपने कुल के अनुसार वेदों में निपुण होता है।

केशांत / रितुशुद्दी संस्कार

बालक के द्वारा सर्वप्रथम दाढ़ी-मूछ मुंडवाना ही केशांत संस्कार कहलाता है। इसी तरह, लड़कियों के लिए, रितुशुद्दी समारोह तब किया जाता है जब वह पहली बार मासिक धर्म शुरू करती हैं।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

यह संस्कार प्रायः गुरु के सानिध्य में ही संपन्न करवाया जाता है। ब्राह्मण बालक का 16 वें वर्ष में, क्षत्रिय बालक का 22वें वर्ष में, वैश्य बालक का 24 वें वर्ष में केशांत संस्कार करवाया जाता है। इस संस्कार के समय बालक के पिता के द्वारा गायों का दान भी किया जाता है, जिसके कारण इस संस्कार को गोदान संस्कार के नाम से भी पुकारा जाता है। संस्कार बचपन से वयस्कता तक महत्वपूर्ण संक्रमण का प्रतीक है। जीवन के इस मोड़ पर, छात्र उन परिवर्तनों को पहचानता और स्वीकार करता है जो शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दोनों रूप से हुए हैं।

समावर्तन संस्कार

समावर्तन का अर्थ है 'आचार्य के घर से घर लौटना।' पहले, जब शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली एक आदर्श थी, तो छात्र अपनी पढ़ाई पूरी होने पर अपने गुरु और गुरुकुल को छोड़ देता था। इस प्रस्थान को समावर्तन संस्कार के रूप में जाना जाता था। यह इस बात का प्रतीक है कि छात्र अब जीवन के अगले चरण में जाने के लिए तैयार है। इस संस्कार को दीक्षांत संस्कार एवं स्नान संस्कार के नाम से भी पुकारा जाता है। इस संस्कार के समय गुरु के द्वारा शिष्यों को उपदेश भी दिया जाता है। कुछ गुरु अपने शिष्यों की परीक्षा भी लेते हैं।

विवाह संस्कार

ब्रह्मचर्य की समाप्ति के बाद गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने से पहले यह संस्कार संपन्न किया जाता है। हमारे धर्म ग्रंथों में कुल आठ प्रकार के विवाह माने गए हैं – ब्रह्म विवाह, आर्ष विवाह, देव विवाह, गंधर्व विवाह, राक्षस विवाह, प्रजापत्य विवाह, पैशाच विवाह, आसुर विवाह।

अंत्येष्टि संस्कार

अंत्येष्टि एक हिंदू के जीवन में अंतिम संस्कार है और किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद रिश्तेदारों द्वारा किया जाता है। हिंदू शास्त्रों और भगवद गीता के अनुसार, मानव आत्मा पुराने शरीर को छोड़ने के बाद पुनर्जन्म लेती है। अंतिम अनुष्ठान ब्राह्मण पुजारियों की मदद से सावधानी से किया जाता है। दस दिनों के शोक के बाद ग्यारहवें दिन शुद्धिकरण समारोह होता है। तेरहवें दिन, यह इंगित करने के लिए एक दावत होती है कि आत्मा पार हो गई है और अंत में अपने विश्राम स्थान पर पहुंच गई है। इस संस्कार में मृतक के परिजनों के द्वारा मृत आत्मा को पिंडदान एवं जलांजलि दी जाती है। इस संसार को श्मशान संस्कार के नाम से भी पुकारा जाता है।

RAO’S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

Sanskar

The meaning of the word Sanskar is-**purity or purity**. The word Sanskar is derived from the addition of the suffix '**Dha'** in the root '**Kriya**'. Sanskar mainly meant **those religious acts** that were done to purify the mind, mind and body of a person with the aim of making him a fully qualified member of his community (society), but the purpose of Hindu samskaras is in the person. It was also to give birth to desirable qualities.

Shabar is of the opinion that samskara is that by virtue of which a substance or a person becomes capable of any work.

• According to **Tantravartika**, samskaras are those actions and rituals which provide merit.

• According to **Veermitrodaya**, sanskar is a unique ability which is achieved by performing the activities prescribed by the scriptures.

• According to **Kumaril**, a person becomes eligible in two ways. First - by removing the defects of past deeds and second - by producing new qualities.

Samskar word is the synonym of the English word **sacrament** which means religious law or acts, the sample meaning of Samskar is taken from purification cleanliness and sophistication , thus **sanmkar refers to the religious activities of purification and ritual performed for the physical, mental and intellectual refinement of the person, by which he /she become a developed member of the society**. The process of gradually purifying oneself in the field of attainment of the fullness of life is called Samskar.

There is a difference of opinion among the scholars regarding the number of sacraments. Their number varies in the Grihya Sutras written by different scholars.

Gautam has given the number of samskaras as 40. Manu has mentioned 13 Samskaras. Yajnavalkya has mentioned 10 Samskaras.

Apart from this, according to Paraspar Grihyasutra, the number of samskaras is 13, Ashvalayana Grihyasutra 11, Baudhayana Grihyasutra 13 samskaras. Angira has 25 samskaras, Vyas 16 samskaras in Vyasmriti and 16 samskaras have been counted in Smriti Chandrika, and only 16 samskaras are seen in later other smritis.

गर्भाधानं पुंसवनं सीमंतो जातकर्म च। नामक्रियानिष्क्रमणेअन्नाशनं वपनक्रिया:।। कर्णवेधो व्रतादेशो वेदारंभक्रियाविधि:। केशांत स्नानमुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रह:।। त्रेताग्निसंग्रहश्चेति संस्कारा: षोडश स्मृता:। (व्यासस्मृति 1/13-15)

Garbhadhan samskara-

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

After entering the household life, it has been considered the most important duty of a person. It is the first (before the birth of a person) ceremony among all the rituals performed by the parents of the person. It should be done from 4th to 16th nights of ritukaal

This ritual was practiced from the Vedic period. Garbhdhan Sanskar is a very important ritual culturally.

The physical union of a man and a woman is called Garbhādhana-samskara. Under this Garbhadhan Sanskar, sperm is deposited in a woman by a man having sex with a woman. Getting pregnant of a woman is called pregnancy.

The main purpose of Garbhdhan Sanskar is the birth of a healthy, beautiful, gentle, virtuous, virtuous, humane child. The scriptures (formula literature) tell us through Garbhdhan Sanskar that a human being should not be born as an animal but should also be born for progeny. Along with this, it also tells that by being mentally and physically healthy and having a pregnancy when the mind is happy, the child becomes healthy and intelligent.

Punsavan Sanskar: means poon- pumaan (purush) has a savan (birth)

This ritual is performed in the third month of a woman's pregnancy. By doing this, proper development of the unborn child is wished. According to the Puranas, its main objective was to have a son (Tejaswi Putra). Because in some periods of ancient Indian history, the position of sons in the society was very important, it is known from many sources.

The main reason why this ritual is performed in the third month (after three months) is that the physical body of the baby starts forming and the brain starts developing during the three months after conception. At this time, the foundation of rituals is laid in the unborn child. The purpose of this samskar is to give birth to beautiful and perfect children. In this , the woman observes a fast and wears new clothes. At night, the juice of Banyan bark is poured into the right nostril of the woman so that there is no abortion. In this sacrament, the husband, by placing water-poor water in the wife's tribe, touches the womb and wishes for abrave son and children

According to Hindu belief and scientific research, it is believed that a person starts learning from the womb itself. As an example, we can take Abhimanyu, who learned to penetrate the Chakravyuh by staying in the womb of Mother Draupadi.

Simantonnayan Sanskar:

According to the **Laghwashvalayan Smriti**, this holy ceremony is known to be held in the fourth month, according to the Ved Vyas Smriti, in the eighth month, according to the Shankh Smriti, in the sixth or eighth month. Because the chances of miscarriage are highest in this month.

The literal meaning of the word Seemantonnayan is - "**Seemant**" means '**hair**' and **'Unnayan'** means **'to raise up'**. Under this, the husband used to raise the hair of his pregnant wife upwards while grooming, hence the name of this ritual was 'Seemantonnayan Sanskar'. Mostly the Seemantonnayan ceremony was performed in the **fourth month** of pregnancy, when the

physical and mental development of the child has started. This is a kind of purification process of the womb.

By this time the fetus growing in the womb starts learning. At this time, as the mother behaves, the same manners will be received by the child. Good qualities, nature, conduct, thoughts, good deeds etc. should flourish in him, therefore the mother should behave in the same manner, live and tolerate. If the mother lives in such an environment where good qualities, nature and deeds are done, it definitely has a positive effect on the mind and appearance of the child.

Jaatkarma samskar-

This ritual is performed at the time of the birth of a son. It is mentioned in the Sanskar Tatva that after the birth of a son, the father used to bathe with clothes and do charity work. It has been said in Manusmriti that before the circumcision of the umbilical cord, caste ceremony is performed and gold is anointed with ghee and honey with mantras. After this the mother starts breastfeeding the child.

Yajnavalkya has also mentioned this ritual. It has been said in the Vishnu Purana that after performing caste rituals, the father takes a ritual bath and performs Nandimukh Shraddha and worship. Ashvalayan and Mitramishra are of the view that when a son is born, the father makes him lick honey and ghee with a golden rod.

Albiruni writes that when the wife gives birth to a child, a third Yajna is performed, which is performed between the birth of the child and the rearing of the child. This is called 'Jatakarma'.

This rite is performed for the purpose that the malefic effects do not fall on the child. Another purpose of this ritual was to bestow health, intelligence, and longevity on the child and to avoid ghost-obstacles.

Namkaran samskar :

This was the second samskara after the birth of the child. Giving a name to a child is the naming ceremony. The effect of the name is reflected on the character of the person.

Naming ritual has been explained in detail in Brahmin texts, Grihasutras etc.

In the Baudhayana Grihasutra, this ceremony is performed on the tenth or twelfth day after the birth of a child.

According to Manu Smriti, on the tenth or twelfth day after birth, the naming ceremony of the child is performed in the auspicious date, Muhurta and Gunyukta Nakshatra mentioned in the astrological scriptures.

Nishkramana

The literal meaning of nishkramana is ***"going out, coming forth."*** In the fourth month after the baby's birth, parents take the baby out of the home, generally to a nearby temple. The main process of this sanskar is to worship the sun and moon etc. gods and make the child see them. Our body is made up of earth, water, fire, air and sky, which are called Panchabhutas. That's why the father prays to these deities in this ritual for the welfare of the child.The baby formally meets the world for the first time. Impressions in the child's mind are formed based on what it sees and hears in this world. This ritual marks the beginning of the baby's mental growth.

Annaprasana:First feeding with boiled rice in 6 months

Annaprasana ceremony is performed in the sixth month or when there is visible growth of the first teeth. It marks the first time a baby eats solid food, typically containing cooked rice. Until now, the baby was nourished only through breast milk. This ceremony is done to bring good health, radiance, and physical strength to the child. After worshiping the deities in an auspicious time, the parents feed kheer to the baby while reciting the following mantra with a gold or silver spoon- **शिवौ ते स्तां व्रीहियवावबलासावदोमधौ। एतौ यक्ष्मं वि बाधेते एतौ मुंचतो अंहस:।। (अथर्ववेद 8/2/18)**

Choorakarna samskar

It is also called mundane or keshochann ceremony. At the end of the first year of the child's age or on completion of the third, fifth or seventh year, the hair of the child is removed, which is called Vapan Kriya Sanskar, Mundan Sanskar or Chudakarma Sanskar. This sanskara represents a new phase of life where the baby's hair is cut, and the nails are trimmed, symbolising-cleansing, renewal, and new growth. After this, the baby is bathed by applying curd-butter on the head and other auspicious rituals are performed. The purpose of this ritual is to increase the strength, age and brightness of the child.

Scientifically, the hair on the head gives us protection from different harmful elements in the environment apart from enhancing our appearance. The new hair that grows is strong and clean, explaining the purpose of this sanskara.

Karnavedha samskar

Under this tradition, the ears of the baby are pierced. That's why it is called Karnavedhan Sanskar. This ritual was performed from six months after birth to five years of age. According to belief, the rays of the sun pass through the holes of the ears to purify the boy and girl and make them prosperous.

This sanskara also has a scientific explanation. Ear lobes have an important acupressure point. Through intensive research, many neurologists have shown the link between earlobes and the hemispheres of the brain.

Piercing ears, therefore, helps in developing intelligence and enhancing immunity against respiratory infections and also from diseases such as hydrocoele and hernia.

Vidyarambh Sanskar

Getting the child to learn alphabets first is called Vidyarambh Sanskar. This ritual is also called by the name of Akshararambh Sanskar. Before going to Guru Ashram, this ceremony is performed to provide general knowledge of language and mathematics to the child. This sanskar is often initiated by the mother at home, on the basis of which the mother is considered as the child's first teacher and the family as the child's first school. This rite is performed till the 8th year.

This ceremony is performed before the upnayan ceremony after bathing the child sits facing West the teacher facing East.

Saraswati is the goddess of learning and knowledge. In the Vidyarambha ceremony, she is worshipped to seek blessings for the child. According to guru shishya parampara, the student would learn the Vedas living with the guru as part of his family, living a disciplined life with a steadfast focus on acquiring knowledge and gaining wisdom.

Upanayana Samskar

This is considered to be the most important ritual in the childhood rituals of the child. Taking the child near the Guru to study Veda Shastras is called Upanayana Sanskar. This ritual is also called by the name of Yagyopaveet Sanskar and Janeu Sanskar. Upnayan Sanskar is performed only for Brahmins, Kshatriyas, Vaishyas. Upanayana ceremony should be performed in the 8th year from the conception of a Brahmin child, in the 11th year from the conception of a Kshatriya child and in the 12th year from the conception of a Vaishya child. If the Upanayana Sanskar is not done in this year, then the Upanayana Sanskar should be done for maximum Brahmins till the 16th year, Kshatriya till the 22nd year and Vaishya till the 24th year.

This sanskar is performed by the Guru. At the time of this Sanskar, the Guru also preaches the Gayatri Mantra to the child.

After this ceremony, the child wears a sacred thread (Yajnopaveet) in which there are 3 sutras (threads) before. Each sutra has 9 threads and each sutra is 96 fingers long.

At the time of this ritual, the child also does alms, first alms is accepted from the mother/aunt/sister.

The three sutras worn in Janeu are considered to be the symbols of the three gods – Brahma, Vishnu, Mahesh.

Vedārambha samskar

Vedārambha means 'beginning of learning Vedas'. While Upanayana marked the beginning of education, Vedarambha refers to the initiation of the Vedic study. In this sanskara, each student, according to his lineage, masters a of the Vedas.

Keshanta/ Ritusuddhi samskar

The first shaving of the beard and mustache by the child is called Keshant Sanskar. Similarly, for girls, the Ritushuddi ceremony is performed when she starts her menses for the first time.

This ritual is usually performed in the presence of the Guru. Keshant Sanskar is performed in the 16th year of a Brahmin child, in the 22nd year of a Kshatriya child, in the 24th year of a Vaishya child. Cows are also donated by the child's father at the time of this rite, due to which this rite is also called as Godan rite. The sanskara marks the significant transition from childhood to adulthood. At this juncture of life, the student recognizes and acknowledges the changes that have occurred both physically and psychologically.

Samavartana samskar

Samavartana means 'returning home from the house of the acharya.' Earlier, when the gurukul system of education was a norm, the student left his guru and gurukul on completion of his studies. This departure was known as samavartan sanskara. It symbolised that the student is now ready to move on to the next stage of life. This rite is also called by the name of Dikshant Sanskar and Snan Sanskar. At the time of this ritual, the disciples are also preached by the Guru. Some gurus also test their disciples.

Vivah samskar

This ceremony is performed before entering the householder's ashram after the end of brahmacharya.

A total of eight types of marriages have been considered in our religious texts – Brahma Vivah, Aarsh Vivah, Dev Vivah, Gandharva Vivah, Rakshasa Vivah, Prajapatya Vivah, Paishach Vivah, Asura Vivah.

Antyeshti samskar

Antyeshti is the final sanskara in a Hindu's life and is performed by the relatives after the death of a person. According to the Hindu scriptures and Bhagavad Gita, the human soul takes rebirth after leaving the old body. The final rituals are performed meticulously with the help of brahmin priests. After mourning for ten days, a purification ceremony takes place on the eleventh day. On the thirteenth day, there is a feast to indicate that the soul has crossed over and finally reached its resting place.

In this ritual, Pindadan and Jalanjali are given to the dead soul by the relatives of the deceased.

This world is also called by the name of crematorium.

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)